International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 September – October 2022

21 वी सदी के हिंदी फिल्मी गीतों में राष्ट्रीय भावना

नीलिमा श्रीवास्तव

शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

Corresponding Author - नीलिमा श्रीवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.7314952

शोध सार:

इस शोध में वर्ष 2000 के बाद की हिंदी फिल्मों के देशभक्ति गीतों को समाविष्ट करके उन में राष्ट्रीय भावना के विभिन्न रूपों का विश्लेषण किया गया है। देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की भावना, शहीदों के प्रति सम्मान की भावना, देश की प्रगति पर उत्साहित देशवासी, देश के प्रति अभिमान, राष्ट्रीय एकता व भाईचारे की भावना, शत्रु पर विजय की आकांक्षा, देश की विविधता का सजीव चित्रण, देश और समाज की खुशहाली और सुरक्षा की कामना तथा आजादी के सात दशक उपरांत हमने क्या खोया क्या पाया का मूल्यांकन जैसे विषय इन गीतों में समाहित हैं।

बीज शब्द:

1- सिनेमा- कला का दृश्य श्रव्य माध्यम जिसमें रजत पथ पर कहानी रची जाती है।

2- राष्ट्रीय भावना- अपने देश के प्रति प्रेम व सम्मान की भावना

3- सरफरोशी- इसी उद्देश्य के लिए प्राण तक देने का उत्साह

4- आजादी- अपने तरीके से जीवन जीने का वातावरण

5- रंग दे बसंती- केसरिया रंग बलिदान त्याग का प्रतीक है रंग दे बसंती का आशय देश के प्रति सर्वोत्तम त्याग की आकांक्षा प्रकट करना है।

6- सर वारना- शीश चढ़ा देना/बलिदान देना

7- मिट्टी में मिलना- देश प्रेम का सर्वोत्तम रूप जहां बलिदान के उपरांत मातृभूमि में विलीन होता है।

8- उम्मीद- आजादी से उपजी आशाएं

9- गरद- कुठाराघात

10- सिंहावलोकन- अतीत को समझने की दृष्टि से अध्ययन।

प्रस्तावना:

राष्ट्र के प्रति प्रेम व्यक्ति का सहज जज्बा है, जिसका विकास स्वत: बाल्यकाल में ही होने लगता है। इसे शब्दों में व्यक्त करना अपने आप में कठिन अवश्य है, किंतु जैसा कि कहा जाता है 'जहां न पहुंचे रवि वहां भी पहुंचे कवि', हमारे

कवियों, गीतकारों ने इन भावनाओं को अत्यंत सुंदरता के साथ शब्दों में पिरोया है। हिंदी सिनेमा के गीतों में राष्ट्रीय भावना की शानदार अभिव्यक्ति हुई है और दृश्य श्रव्य इस माध्यम में इन गीतों को सुनकर दर्शक वृंद का रोम-रोम रोमांचित हो जाता है। कारगिल विजय के उपरांत, जनमानस में हुए राष्ट्रीय भावनाओं के संचार का प्रभाव, 21वीं शताब्दी के गीतों में स्पष्ट देखा जा सकता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम सम्मान और सर्वस्व समर्पण की भावना, एक व्यक्ति को सच्चा देशभक्त बनाती है। राष्ट्रभक्ति की यही भावनाएं समय-समय पर कविता, कहानी, निबंध और गीतों के माध्यम से व्यक्त की जाती है। हिंदी सिनेमा के गीत भी इसी बृहद परिवेश का एक अंश हैं। आजादी के पहले और बाद में हिंदी सिनेमा के गीतों में राष्ट्रप्रेम की गंगा प्रवाहित होती रही है। समय अनुसार उनके शब्दों और संगीत की शैली में बदलाव आया है परंतु राष्ट्रप्रेम की भावना सदैव विद्यमान रही है।

शोध आलेख:

राष्ट्रप्रेम की भावना शाश्वत होती है। प्रत्येक नागरिक में बाल्यपन से ही इसका प्रस्फुटन होता है। समय के साथ यह भावना बलबती होती जाती है। हजारों सालों से देशप्रेम, मानव के सर्वोत्तम संस्कारों में से एक माना जाता है।

राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने में राष्ट्रगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राष्ट्र के प्रति त्याग, प्रेम, भक्ति, आस्था, विश्वास इत्यादि मन को रोमांच से भर देते हैं।

उन्नीसवीं सदी में कला के महान आविष्कार सिनेमा का जन्म हुआ। सिनेमा ने भी राष्ट्रीयता से ओत प्रोत अनेक गीत प्रदान किए। बीसवीं शताब्दी के महान गीतों की परंपरा इक्कीसवीं सदी में भी अनवरत जारी है- और हो भी क्यों नही? जब तक मानव मन में राष्ट्रीयता की भावना रहेगी, गीतकारों की लेखनी उससे संबंधित गीतों की रचना करती रहेगी। राष्ट्रीयता की इसी पावन भावना को दर्शाते अनेक गीत इस लेख में शामिल किए गए हैं।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है:

वक़्त आने पे बता देंगे तुझे ऐ आसमां, क्या बताएँ हम जुनूनें शौक किस मंज़िल में है दूरियाँ उम्मीद की ना आज हमसे छूट जाए, मिलके देखा है जिन्हें वो सपने भी ना रूठ जाए हौंसले वो हौंसले क्या जो सितम से टूट जाए, सरफरोशी की तमन्ना...

तेरे सोने रूप को हम इक नयी बहार देंगे, अपने ही लहू से तेरा रंग हम निखार देंगे देश मेरे देश तुझपे ज़िन्दगी भी वार देंगे, सरफरोशी की तमन्ना...

खुशबू बन के महका करेंगे, हम लहलहाती हर फसलों में, साँस बन के हम गुनगुनायेंगे, आने वाली हर नस्लों में आने वाली, आने वाली, नस्लों में, सरफरोशी की तमन्ना...

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है देख सकता है तो तू भी देख ले ऐ आसमां, हौंसला ये देख के कातिल बड़ी मुश्किल में है

अपने ही लहू से हम लिखेंगे अपनी

दास्ताँ, ज़ालिमों से छीन लेंगे ये ज़मीं ये आसमां सरफिरे जवान हम तो मौत से भी ना डरें, आज आये देश में ये क्यूँ गँवारा हम करें मुल्क पे कुर्बान हो ये आरज़ू मेरे दिल में है सरफरोशी की तमन्ना...

द लीजेंड ऑफ भगत सिंह फिल्म का यह गीत गीतकार समीर ने लिखा है। भगत सिंह की शहादत की कहानी कहते इस गीत के हर शब्द में राष्ट्रीय भावना है। इस गीत में देश भक्ति के रंग में रंगा हुआ युवक अपने देश की समृद्धि, संपन्नता और स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने सहर्ष तैयार है। ऐसे राष्ट्र वीरों के लिए देश ही सब कुछ है। इस गीत के शब्दों में वह शक्ति है जो श्रोताओं के रोम रोम में ऊर्जा का संचार कर दे।

जय है, जय है, जय है, जय है, जागे हैं अब सारे , लोग तेरे देख वतन, गूँजे है नारों से, अब ये ज़मीं और ये गगन

कल तक मैं तन्हा था, सूने थे सब रस्ते, कल तक मैं तन्हा था, पर अब हैं साथ मेरे लाखों दिलों की धड़कन देख वतन, आज़ादी पाएँगे, आज़ादी लायेंगे आज़ादी छाएगी, आज़ादी आएगी जय है, जय है, जय है, जय है जागे हैं अब सारे, लोग तेरे देख वतन, गूँजे है नारों से, अब ये ज़मीं और ये गगन कल तक मैं तन्हा था, सूने थे सब रस्ते, कल तक मैं तन्हा था, पर अब हैं साथ मेरे लाखों दिलों की धड़कन देख वतन, हम चाहें आज़ादी, हम मांगें आज़ादी आज़ादी छाएगी, आज़ादी आएगी जय है, जय है, जय है, जय है

फिल्म बोस द फॉरगेटन हीरो का यह गीत जावेद अख्तर ने लिखा है। राष्ट्रीय एकता की भावना से भरपूर इस गीत की मूल अभिव्यक्ति यही है कि आपसी गलतफहमियों को भूलकर देश हित एक होकर असंभव को भी संभव किया जा सकता है।

तेरी शान पे सदके

कोई धन है क्या, तेरी धूल से बढ़के, तेरी धूप से रौशन, तेरी हवा पे जिंदा
तू बाग है मेरा, मैं तेरा परिंदा
है अर्जी दीवाने की, जहाँ भोर सुहानी देखी इक रोज़ वहीं मेरी शाम हो
कभी याद करे जो ज़माना, माटी पर मिट जाना
ज़िकर में शामिल, मेरा नाम हो, ओ देश मेरे, तेरी शान पे सदके
कोई धन है क्या, तेरी धूल से बढ़के, तेरी धूप से रौशन, तेरी हवा पे जिंदा
तू बाग है मेरा, मैं तेरा परिंदा
आँचल तेरा रहे माँ..रंग बिरंगा, हो ओ उँचा आसमान से
हो तेरा तिरंगा, जीने की इज़ाज़त देदे या हुकुमे शहादत देदे, मंजूर हमें जो भी तू चुने
रेशम का हो मधुशाला, या कफ़न सिपाही वाला, ओढेंगे हम जो भी तू बूने
ओ देश मेरे, तेरी शान पे सदके, कोई धन है क्या.. तेरी धूल से बढ़के
तेरी धूप से रौशन, तेरी हवा पे जिंदा..
तू बाग है मेरा, मैं तेरा परिंदा.

फिल्म भुज द प्राइड ऑफ इंडिया गीतकार मनोज मुंतशिर की कलम से निर्मित यह गीत राष्ट्रीय भावना की अलग कहानी कहता है। देश की मिट्टी किसी भी धन दौलत से कीमती है देश की धूप, हवा, प्रकृति सभी के लिए देश भक्त कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को व्यक्त करती पंक्ति

"कभी याद करे जो जमाना माटी पर मिट जाना जिकर में शामिल मेरा नाम हो"

इस गीत के शाब्दिक सौदर्य को और भी बढ़ा रही है। मातृभूमि के लिए त्याग और समर्पण को अभिव्यक्त करता है यह गीत।

कन्धों से मिलते हैं कन्धे, कदमों से कदम मिलते हैं:

हम चलते हैं जब ऐसे तो दिल दुश्मन के हिलते हैं अब तो हमें आगे बढ़ते है रहना, अब तो हमें साथी है बस इतना ही कहना अब जो भी हो शोला बन के पत्थर है पिघलाना, अब जो भी हो बादल बन के परबत पर है छाना निकले हैं मैदां में हम जाँ हथेली पर लेकर, अब देखो दम लेंगे हम जा के अपनी मंज़िल पर खतरों से हँस के खेलना, इतनी तो हममें हिम्मत है, मोड़े कलाई मौत की, इतनी तो हममें ताक़त है हम सरहदों के वास्ते लोहे की इक दीवार हैं, हम दुश्मनों के वास्ते होशियार हैं, तैयार हैं अब जो भी हो...

जोश दिल में जगाते चलो, जीत के गीत गाते चलो, जीत की जो तस्वीर बनाने हम निकले हैं अपनी लहू से हमको उसमें रंग भरना है, साथी मैंने अपने दिल में अब ये ठान लिया है या तो अब करना है, या तो अब मरना है, चाहे अंगारें बरसे कि बिजली गिरे तू अकेला नहीं होगा यारा मेरे, कोई मुश्किल हो या हो कोई मोर्चा साथ हर मोड़ पर होंगे साथी तेरे अब जो भी हो...

इक चेहरा अक्सर मुझे याद आता है, इस दिल को चुपके-चुपके वो तड़पाता है जब घर से कोई भी ख़त आया है, कागज़ को मैंने भीगा-भीगा पाया है पलकों पे यादों के कुछ दीप जैसे जलते हैं, कुछ सपने ऐसे हैं, जो साथ-साथ चलते हैं कोई सपना न टूटे, कोई वादा न टूटे, तुम चाहो जिसे दिल से वो तुमसे ना रूठे अब जो भी हो...

चलता है जो ये कारवाँ, गूंजी सी है ये वादियाँ, है ये ज़मीं, ये आसमां,है ये हवा, है ये समां हर रस्ते ने, हर वादी ने, हर परबत ने, सदा दी, हम जीतेंगे, हम जीतेंगे, हम जीतेंगे, हर बाज़ी कन्धों से मिलते... चलता है जो ये कारवाँ, गूंजी सी है, ये वादियाँ

लक्ष्य फिल्म का यह गीत गीतकार जावेद अख्तर ने लिखा है। यह देश की रक्षक भारतीय सेना की आत्मिक भावनाओं को व्यक्त करता है। हमारे देश के सैनिक कठिन परिस्थितियों में भी हौसला बनाए रखते हैं। ये अपनी जान की परवाह किए बिना कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहते हैं। सकारात्मक सोच को लिए ये हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं। अपने घर परिवार की याद कर इनकी आंखे नम भी होती हैं लेकिन देश सेवा सर्वोपरि का मंत्र लिए ये दुश्मन के छक्के छुड़ाते रहते हैं। ऐसी सोच और ऐसी बहादुरी का जस्बा हर भारतीय सैनिक में है और जो इनके शौर्य और पराक्रम में चार चांद लगाते हैं।

ये जो देस है तेरा , स्वदेस है तेरा, तुझे है पुकारा.. ये वो बंधन है, जो कभी टूट नहीं सकता:

मिट्टी की है जो खुशबू , तू कैसे भुलायेगा,
तू चाहे कही जाए, तू लौट के आएगा
नई-नई राहों में, दबी-दबी आहों में खोए-खोए दिल से तेरे,
कोई ये कहेगा ये जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा तुझे है पुकारा..
ये वो बंधन है, जो कभी तूट नहीं सकता
हम्म.. हम्म..
तुझ से ज़िन्दगी, है ये कह रही सब तो पा लिया, अब है क्या कमी पर दूर तू है अपने घर से
आ लौट चल तू अब दीवाने जहाँ कोई तो तुझे अपना मानें आवाज़ दे तुझे बुलाने,
वही देस ये जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा तुझे है पुकारा..
ये वो बंधन है, जो कभी तूट नहीं सकता
हम्म.. हम्म..
ये पल है वही, जिस में है छुपी कोई एक सदी, सारी ज़िन्दगी तू ना पूछ
रास्ते में काहे आये हैं इस तरह दो राहें तू ही तो है राह जो सुझाए तू ही तो है
अब जो ये बताये चाहे तो किस दिशा में जाए
वही देस ये जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा तुझे है पुकारा..
ये वो बंधन है, जो कभी तूट नहीं सकता
हम्म.. हम्म..

जावेद अख्तर का लिखा स्वदेश फिल्म का यह गीत परदेस में बसे देशवासियों के हृदय स्थल को झकझोर देता है। विदेश में रहकर सारे सुख उन्हें मिलते हैं फिर भी उनके मन में बैचैनी रहती है क्योंकि उन्हें देश की मिट्टी की खुशबू लुभाती है और देशप्रेम की भावना के चलते वे असमंजस में रहते हैं की क्या करें अपने देश जाएं या विदेश में ही रहें। सब कुछ पाकर भी देश से दूर रहने की पीड़ा भली-भांति व्यक्त हुई है।

थोड़ी सी धूल मेरी, धरती की मेरे वतन की..,थोड़ी सी खुशबू बौराई सी मस्त पवन की:

थोड़ी सी धोंकने वाली धक-धक धक-धक धक-धक सांसे, जिन मे हो जूनून जूनून वो बूंदे लाल लहू की
यह सब तू मिला मिला ले फिर रंग तू खिला खिला ले..और मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती, मोहे मोहे तू रंग दे बसंती.........
ओह मोहे रंग दे बसंती बसंती रंग दे बसंती..
सपने रंग दे, अपने रंग दे, खुशियां रंग दे, गम भी रंग दे, नस्ले रंग दे, फसले रंग दे, रंग दे धड़कन, रंग दे सरगम
और मोहे तू रंग दे बसंती यारा, मोहे तू रंग दे बसंती
थोड़ी सी धूल मेरी धरती की मेरे वतन की..थोड़ी सी खुशबू बौराई सी मस्त पवन की
थोड़ी सी धोंकने वाली धक-धक धक-

धक धक-धक सांसे, जिन मे हो जूनून
जूनून वो बूंदे लाल लहू की
यह सब तू मिला मिला ले फिर रंग तू खिला खिला ले..
और मोहे तू रंग दे बसंती यारा,मोहे तू रंग दे बसंती
धीमी आंच पे तू ज़रा इश्क चढ़ा, थोड़े झरने ला, थोड़ी नदी मिला
थोड़े सागर ला, थोड़ी गागर ला, थोडा छिड़क छिड़क, थोडा हिला हिला
फिर एक रंग तू खिला खिला, मोहे मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे तू रंग दे बसंती
बस्ती रंग दे, हस्ती रंग दे, हंस हंस रंग दे, नस नस रंग दे
बचपन रंग दे, जोबन रंग दे, अब देर न कर सचमुच रंग दे, रंग रेज़ मेरे सब कुछ रंग दे
मोहे मोहे तू रंग दे बसंती यारा, मोहे तू रंग दे बसंती, थोड़ी सी धूल मेरी धरती की मेरे वतन की..
थोड़ी सी खुशबू बौराई सी मस्त पवन की
थोड़ी सी धोंकने वाली धक-धक धक-धक धक-धक सांसे, जिन मे हो जूनून
जूनून वो बूंदे लाल लहू की
यह सब तू मिला मिला ले फिर रंग तू खिला खिला ले..,मोहे मोहे तू रंग दे बसंती यारा
मोहे मोहे तू रंग दे बसंती.........मोहे रंग दे बसंती बसंती रंग दे बसंती....
रंग दे रंग दे रंग दे बसंती
मोहे रंग दे बसंती बसंती रंग दे बसंती बसंती, मोहे रंग दे बसंती रंग दे बसंती रंग दे बसंती

प्रसून जोशी के लिखे रंग दे बसंती फिल्म के इस गीत में शौर्य उमंग और उत्साह के प्रतीक बसंती रंग से रंगने की बात कही गई है। जीवन की हर छोटी बड़ी खुशी,गम सभी को राष्ट्र प्रेम के इस रंग से सराबोर होने की बात कही गई है। ऐसी भावना ही सच्ची राष्ट्रीयता है।

यहाँ हर कदम कदम पे धरती बदले रंग:

यहाँ की बोली मे रंगोली सात रंग, यहाँ हर कदम कदम पे धरती बदले रंग यहाँ की बोली मे रंगोली सात रंग, धानी पगड़ी पहने मौसम है, नीली चादर ताने अम्बर है नदी सुनहरी, हरा समुन्दर है रे सजीला, देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला, देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला वंदेमातरम.. वंदेमातरम..
वंदेमातरम.. वंदेमातरम..

सिन्दूरी *गालों* वाला सूरज जो करे ठिठोली, शर्मीले खेतो को ढंक ले चुनर पीली पीली घूंघट मे रंग पनघट मे रंग चम् चम् चमकीला, देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला..हो.. हो..हो.. हो..

अबीर गुलाल से चेहरे है यहां मस्तानों की टोली,रंग हसी मे रंग ख़ुशी मे रिश्ते जैसे होली बातो मे रंग यादो मे रंग रंग रंग रंगीला, देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला..

इश्क का रंग यहां पर गहरा चढ़ के कभी न उतरे,

सच्चे प्यार का ठहरा सा रंग छलके पर न बिखरे
रंग अदा मे रंग हया मे है रसीला, देस रंगीला
रंगीला देस मेरा रंगीला देस रंगीला रंगीला देस
मेरा रंगीला, देस रंगीला रंगीला देस मेरा रंगीला

फना फिल्म का प्रसून जोशी का लिखा यह गीत भारत की विविधता में एकता का परिचायक है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हमारा देश अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। आपसी रिश्ते भी यहां खुशी के रंगों से सदा सराबोर रहते हैं।

ऐ वतन.. मेरे वतन..ऐ वतन.. आबाद रहे तू:

आबाद रहे तू.. आबाद रहे तू, ऐ वतन,
वतन मेरे, आबाद रहे तू
ऐ वतन, वतन मेरे, आबाद रहे तू, मैं जहाँ
रहूँ जहाँ में याद रहे तू
मैं जहाँ रहूँ जहाँ में याद रहे तू
ऐ वतन.. मेरे वतन
तू ही मेरी मंजिल है, पहचान तुझी से.., तू
ही मेरी मंजिल है, पहचान तुझी से..
पहुंचू मैं जहां भी, मेरी बुनियाद रहे तू,
पहुंचू मैं जहां भी, मेरी बुनियाद रहे तू
ऐ वतन, वतन मेरे, आबाद रहे तू
तुझपे कोई गम की आंच आने नहीं दूं
तुझपे कोई गम की आंच आने नहीं दूं..
कुर्बान मेरी जान तुझपे, शाद रहे तू
कुर्बान मेरी जान तुझपे, शाद रहे तू ऐ
वतन, वतन मेरे, आबाद रहे तू
मैं जहाँ रहूँ, जहाँ में, याद रहे तू
ऐ वतन.. ऐ वतन..मेरे वतन.. मेरे वतन..
ऐ वतन.. ऐ वतन..मेरे वतन.. मेरे वतन..
आबाद रहे तू.. आबाद रहे तू..ऐ वतन..
मेरे वतन.., आबाद रहे तू..
मैं जहाँ रहूँ जहाँ में याद रहे तूऐ वतन..
मेरे वतन..आ.. आ.. आ..

गुलजार का लिखा राजी फिल्म का यह गीत देश में समृद्धि की दुआ को बतला रहा है। एक सच्चा देशभक्त वही है जिसकी जिंदगी की मंजिल, पहचान सभी कुछ देश से जुड़ी हों क्योंकि देश के प्रत्येक नागरिक की उन्नति उस देश की भी उन्नति है। जहां भी रहें देश के प्रति कृतज्ञता और समर्पण हो। इसके लिए यदि प्राणों की बाजी भी लगानी पड़े तो हम पीछे न हटें।

तलवारों पे सर वार दिए अंगारों में जिस्म जलाया है:

तब जाके के कहीं हमने सर पे यह केसरी
रंग सजाया है......
ऐ मेरी ज़मीन अफ़सोस नहीं जो तेरे लिए
सौ दर्द सहे
महफ़ूज़ रहे तेरी आन सदा चाहे जान मेरी
ये रहे ना रहे
ऐ मेरी ज़मीन महबूब मेरी मेरी नस नस में
तेरा इश्क़ बहे फीका ना पड़े
कभी रंग तेरा जिस्मों से निकल के ख़ून
कहे
तेरी मिट्टी में मिल जावाँ गुल बनके मैं
खिल जावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू
तेरी नदियों में बह जावाँ तेरे खेतों में
लहरावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू
वो ओ... सरसों से भरे खलिहान मेरे
जहाँ झूम के भंगड़ा पा ना सका
आबाद रहे वो गाँव मेरा जहाँ लौट के

वापस जा ना सका हो वतना वे, मेरे वतना वे
तेरा मेरा प्यार निराला था कुर्बान हुआ
तेरी अस्मत पे मैं कितना नसीबों वाला था
तेरी मिट्टी में मिल जावाँ गुल बनके मैं खिल जावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू
तेरी नदियों में बह जावाँ तेरे खेतों में लहरावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू
ओ हीर मेरी तू हँसती रहे तेरी आँख घड़ी भर नम ना हो मैं मरता था जिस मुखड़े पे कभी उसका उजाला कम ना हो
ओ माई मेरी क्या फ़िक़र तुझे क्यूँ आँख से दरिया बहता है तू कहती थी तेरा चाँद हूँ मैं और चाँद हमेशा रहता है
तेरी मिट्टी में मिल जावाँ गुल बनके मैं खिल जावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू
तेरी नदियों में बह जावाँ
तेरे खेतों में लहरावाँ इतनी सी है दिल की आरज़ू

मनोज मुंतशिर की लेखनी से प्रस्फुटित यह गीत केसरी फिल्म से है। इस गीत के शब्दों में राष्ट्रीयता की महक है। देश के महान सपूतों के त्याग और बलिदान के फलस्वरूप देश में शांति की स्थापना हो पाई। कठिनाइयों का सामना करके अपने देश की गरिमा को बनाए रखना धरती माता के प्रति सच्ची कृतज्ञता है। देश प्रेम की सात्विक भावना देश हित में प्राणों का त्याग करने के लिए साहस प्रदान करती है। राष्ट्र के लिए दी गई कुर्बानी वहां की समृद्धि के रूप में दृष्टव्य होती है। ऐसे बलिदानी के लिए सभी गर्व महसूस करते हैं क्योंकि शहादत वह त्यौहार है जिसे किसी एक जाति धर्म या समुदाय के लोग नही मानते शहादत पर सारा राष्ट्र सलामी देता है और यह एक शहीद को अमर बनाती है।

हर कदम वतन मेरे नाज़ है तेरा:

हर कदम वतन मेरे नाज़ है तेरा
आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा,
आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा
हर कदम वतन मेरे नाज़ है तेरा, हर कदम वतन मेरे नाज़ है तेरा
आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा,
आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा
वन्दे मातरम..वन्दे मातरम..वन्दे मातरम..वन्दे मातरम
हवाएं कह रही अपनो की दास्तान, ऐसा ना मिला हमको ये गुलशिता
हवाएं कह रही अपनो की दास्तान, ऐसा ना मिला हमको ये गुलशिता
सरहदों पे कितने ही शहीदों के लहू बहे,
सरहदों पे कितने ही शहीदों के लहू बहे
उनकी ये कुर्बानियां याद हमे भी रहे,उनकी ये कुर्बानियां याद हमे भी रहे
उनके जैसे उडने का और अंदाज़ है ज़रा,आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा
आज़ाद मैं हूँ और वतन आज़ाद है मेरा
वन्दे मातरम..वन्दे मातरम..वन्दे मातरम..वन्दे मातरम
सरफरोशी को चले है बाँध के कफन,
दुश्मनों को करने उनकी मिट्टी मैं दफन
अब जो हमारि तरफ बढ़े कोई कदम,

इतिहास से मिटा देंगे उनकी बुनियाद हम
मरके भी मिटे ना दे, मरके भी मिटे ना दे,
तिरंगे की ये शान
हिंदुस्तान तेरे लिए दे देंगे अपनी जान
वन्दे मातरम..वन्दे मातरम (वन्दे मातरम)
सुजलाम सुफलाम मातरम(मातरम), वन्दे मातरम (वन्दे)
मलयाजा शीतलाम् मातरम् वन्दे मातरम
वन्दे मातरम

रोमियो अकबर वाल्टर फिल्म का यह गीत शब्बीर अहमद ने लिखा है। देश की आजादी की दास्तान सुनाता है यह गीत। आजाद देश में हर कोई खुश है परंतु इस खुशी को पाने के लिए शहीदों ने अपना बलिदान दिया है ये हमें याद रखना चाहिए। हम दुश्मनों का नामो निशान मिटाने के लिए अपना बलिदान भी दे देंगे परंतु तिरंगे की शान को कभी मिटने नही देंगे। हे मातृभूमि! तुझे प्रणाम है।

ज़रा सा आओ न बैठो, वतन की बात करे:

ज़रा सा आओ न बैठो, वतन की बात करे वतन की बात करे, वतन की बात करे, वतन की बात करे
उम्मीदे डूब गए जो, निगल निगल के भवर, उम्मीदे डूब गए जो, निगल निगल निगल निगल के भवर, उम्मीदे हांफ रही है, जो बडबानो में, उम्मीदो सोखा के कत्लो गबन की बात करे, वतन की बात करे, जरा सा आओ न, ज़रा सा आओ न वतन की बात करे, वतन की बात करे, वतन की बात करे पचास सालों में ऐसा नहीं, के कुछ न हुआ, पचास सालों में ऐसा नहीं, के कुछ न हुआ फलक खुला तो गिरी, धूप जैसे गरद गिरे, फलक खुला तो गिरी, धूप जैसे गरद गिरे हर एक रोज़ फलक को, उठे साख किया, हमारे पैरो पे, कुल्हड़िया गिरी लेकिन हमारे पैरो पे, *कुल्हाड़ियां* गिरी लेकिन, हमारे पैरो पे, *कुल्हाड़ियां* गिरी लेकिन लहू लुहान कदम, सीढ़ियों पे चढ़ते रहे, निकल तो आए है हम, घुटनों घुटनों दल दल से अभी खुला नहीं कैसे, चमन की बात करे, अभी खुला नहीं कैसे, चमन की बात करे चलो ना चलते और, वतन की बात करे, चलो ना चलते और, वतन की बात करे वतन की बात करे, वतन की बात करे, है वतन की बात करे, जरा सा चलो वतन की बात करो.

चिंतन की प्रक्रिया देश और समाज के उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है उपरोक्त गीत में देश के नागरिक देश की वर्तमान हालात पर चर्चा कर रहे हैं और विगत दशकों में हुई प्रगति और अवनति पर सिंहावलोकन किया जा रहा है। इस दौरान हमें अनेक निराशाओं का सामना करना पड़ा लेकिन उम्मीद अभी खत्म नहीं हुई है ऐसा इस गीत का भाव है।

1'फ्रेंच राज्य क्रांति के प्रणेता रूसो ने कहा था कि , "आपके देश में युवाओं के होठों पर कौन से गीत है ? मुझे बताओ, मैं तुम्हारे देश का भविष्य बताता हूं।" रूसो के वक्तव्य को किसी भी कसौटी पर जांच कर देखा जाए तो उसकी सत्यता स्वीकारणीय है। इस कसौटी को देश, काल, स्थिति आदि किसी का भी बंधन नहीं है । भारत के विषय में कहा जाए तो पिछले कुछ वर्षों में युवाओं में देशभक्ति की ज्योत जलती हुई प्रतीत होती है, फिर भी इसे देशभक्ति की धधकती ज्योत में बदलने के लिए एक ठोस

प्रयास करने की आवश्यकता है।'1

21 वी सदी के सिनेमा से ऐसे सार्थक प्रयासों की अपेक्षा सारे देश और समाज को है।

निष्कर्ष:

किसी भी देश व समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि उसमें रहने वाले लोगों में राष्ट्रीय भावना हो। यह कार्य किसी भी शिक्षा व्यवस्था का अहम उद्देश्य होना चाहिए। औपचारिक माध्यम जैसे विद्यालय इत्यादि तथा अनौपचारिक माध्यम जैसे समारोह, दूरदर्शन, सिनेमा - दोनों का ही इस कार्य में समान महत्व है। इस शोध में सम्मिलित गीतों के अतिरिक्त भी ऐसे अनेक गीत हैं जिनसे राष्ट्रीय भावना का प्रसार होता है।

ऐसे विषय उदीयमान गीतकारों को उनका कर्तव्य बोध कराते हैं जिससे सिनेमा, मनोरंजन के साथ ही, सच्चे अर्थों में अपने शैक्षणिक उद्देश्य की भी पूर्ति कर पाता है। निष्कर्षतः, 21 वी सदी के हिंदी फिल्मी गीत राष्ट्रीय भावना की कसौटी पर पूर्णतः खरा उतरते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1- *चेतन राजहंस, 2022, लेख आज की युवा पीढ़ी और राष्ट्र के प्रति अभिमान- स्वामी विवेकानंद जयंती पर विशेष*

2- *www.hinditracks.in*

3- *www.lyricsindia.net*

4- *www.m.hindigeetmala.net*

5- *www.hindilyrics123.com*

6- *www.spotify.com*

7- *www.hindiraag.com*

8- *www.in.pinterest.com*

9- *www.lyricsquotes.in*